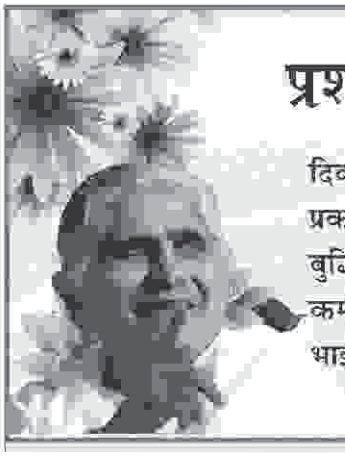

प्रश्न हमारे, उत्तर दादी जी के

दिव्य बुद्धि के वरदान से विभूषित आदरणीया दादी जानकी जी, हर प्रकार के प्रश्नों के उत्तर देकर आत्मा को संतोष से भर देती हैं। बुद्धिवानों की बुद्धि बाबा ने उन्हें ऐसी कला प्रदान की है कि वे उलझे कर्मों की गुत्थियाँ सुलझाकर समाधानस्वरूप बना देती हैं। प्रस्तुत हैं भाई-बहनों द्वारा पूछे गए प्रश्नों के दादी जानकी द्वारा दिये गये उत्तर

– सम्पादक

प्रश्न:- आप इन दिनों बाबा से किस तरह से चिटचैट करती हैं?

उत्तर:- जब दोनों साथी परिपक्व होते हैं तो बात कम करते हैं पर दोनों के मंगल मिलन से हर एक को लाइट-माइट का अनुभव होता है। यह एक शक्ति है आज्ञाकारी बनने की। आज्ञाकारी अर्थात् सिवाए बाबा के और कोई याद आता ही नहीं है और थोड़ा भी निष्फल नहीं हुए हैं। क्या करें, यह मजबूरी जब भी आती है माना बाबा से सम्बन्ध नहीं है। बाबा के हर बोल के लिए कदर है, उसी प्रमाण अपनी जीवन-यात्रा सफल की है। तन-मन-धन मेरा नहीं है, कहाँ भी थोड़ा भी जो मेरा है, वो अन्दर खींचता है। सम्बन्ध में मेरापन है, तन में मेरापन है, कहीं पर भी मेरापन है तो उसको समर्पित कैसे कहेंगे? कुछ मेरा नहीं माना समर्पण। बाबा ऐसे बच्चे को छत्रछाया के नीचे ऐसे रखता है जैसे गोदी में लेके गले का हार बनाया। अभी सेवा में छत्रछाया है। कुछ और संकल्प है ही नहीं।

प्रश्न:- हमारे में ऐसी समझ कैसे आये जो हम समझ सकें कि सही समय पर, क्या सही करने का है?

उत्तर:- कोई सरकमस्टांस है तो कोई बात नहीं है, बाबा बैठे हैं, यह अन्दर में विश्वास हो, निश्चय रहे। सोचने से बात बड़ी हो जाती है। बाबा बैठे हैं... इसलिए चिंता करने की बात नहीं है। हमने 42 सालों से विदेश सेवा के अनुभव में देखा है, कई जगह पर भूकम्प आया होगा, कोई आपदा आयी होगी पर बाबा के बच्चे सुरक्षित रहे हैं। कुछ भी हुआ है फिर भी किसी बच्चे को कुछ भी नहीं हुआ है क्योंकि ऐसों की सम्भाल करने के लिए बाबा कोई-न-कोई विधि अपनाता है और वो विधि फिर सारे जीवन काम आती है। यह बहुतकाल से भगवान के साथ का अनुभव है इसलिए कभी भी कुछ भी होता है तो कभी यह नहीं कहो कि मैं क्या करूँ? बाबा को याद करते रहो तो कोई-न-कोई युक्ति वा समझ बाबा वक्त पर दे देते हैं। बाबा की याद में अच्छी तरह से जीवन को सफल करो।

प्रश्न:- हमारा ड्रामा में और बाबा में तो पूरा विश्वास है लेकिन खुद में थोड़ा कम है तो उस विश्वास को कैसे बढ़ायें?

उत्तर:- विश्वास बढ़ता तभी है जब कोई भी बात के विस्तार में नहीं जाते हैं। क्या करूँ वा कैसे करूँ, इस प्रकार सोचा तो बात के विस्तार में चले गये। ड्रामा अनुसार परीक्षा आयी है, बाबा बैठे हैं, वन्डरफुल है, ठीक हो जाती है। फिर स्वत: अच्छी बातें हमारे से होंगी, यह विश्वास है। बाबा ने कराया, मैंने किया। मैं कैसे करूँ... माना बाबा में निश्चय नहीं है। ड्रामा की नॉलेज बहुत गहरी है, बाबा सारा दिन स्मृति दिलाता है कि यह मेरा बच्चा कल्प पहले वाला है। बाबा ने कहा, मेरा बच्चा, तो मुझे फीलिंग आयी। बाबा ने कहा, स्वदर्शन चक्र फिराओ, स्वदर्शन चक्र नहीं फिराते हो तो अपने में विश्वास नहीं होता है। मेरे को अपने में विश्वास है, ड्रामा की नॉलेज अच्छा चला रही है, बाबा मेरा बाप, टीचर, सतगुरु है। मेरा बाप धर्मराज भी है,

यह याद रखने से मन-वाणी-कर्म पर अटेन्शन रहता है। इससे संकल्प, समय भी सफल होते हैं। एक घड़ी भी निष्फल नहीं जायेगी।

प्रश्नः- कई युवा चाहे योग में, चाहे कर्मणा वा दिनचर्या में जब अनुशासन में नहीं चलते हैं तो लगता है कि वे अपने आपको ही धोखा दे रहे हैं, अनुशासन के साथ मित्रता हम कैसे बनायें।

उत्तरः- सबसे पहले तो अनुशासन के महत्व को समझना है जैसे क्लास में समय पर आना, अमृतवेले योग करना, शाम का योग करना आदि। अलबेलाई, आलस्य और बहाना ये तीन बातें नहीं चाहिएँ। कोई भी, कुछ भी बोले, बाप की पालना, पढ़ाई की कदर हो। जो बाबा से मिला है उसकी कदर हो तो वह स्वतः अनुशासन में चलाती है। थोड़ी भी अलबेलाई भूलें कराती है। कराची में एक बार मम्मा क्लास में एक मिनट लेट हुई। बाबा क्लास में चले गये तो मम्मा वहीं सीढ़ियों पर बैठ गयी। हमने कहा कि मम्मा ऊपर क्लास में चलो ना, तो मम्मा ने कहा, मैं लायक नहीं हूँ, बाबा क्लास में पहुंच गये हैं, अभी मैं कैसे जाऊं। तो ऐसा अनुशासन हो। मैं कभी बहाना नहीं दे सकती हूँ, जो समय पर करने का महत्व है, वह पता है। अनुशासन से भी मार्क्स मिलते हैं। कोई भी काम समय पर करें, यह भी अनुशासन है।

प्रश्नः- आत्मा पंछी में उड़ने का बल कब आता है?

उत्तरः- क्वेश्चन माना क्यू में खड़ा होना, उत्तर मिलेगा तो भी वह नहीं सुनेगा। सुने तो आगे बढ़े ना। पंख टूटे पड़े हैं। भले बाबा कहते हैं, चल उड़ जा रे पंछी... पर पंछी तभी उड़ेगा जब देश बेगाना समझेगा। मेरा नहीं है, पराया है। संगम का यह समय बताता है कि यह देश पुराना है, पराया है। बाप नया बनाने आते हैं। बाप कोई पुराने की मरम्मत करने नहीं आते हैं, नया बनाने आते हैं। तो देश देखो, सम्बन्ध देखो, कुछ भी हमारा नहीं। नाममात्र हम एक साथ बैठे हैं। बाबा की दृष्टि से उस पार चले जाते हैं। बाबा कभी कहते हैं, मेरे को याद करो, कभी कहते हैं, मेरे घर को याद करो। बैठे यहाँ सामने हैं, पर जहाँ से, जिस घर से आये हुए हैं वो हमारा भी घर है। याद में हर एक का भिन्न-भिन्न प्रकार का अनुभव होगा। कभी अपने को आत्मा समझने से बाबा को याद करना सहज है। कभी आत्मा समझने में समय लगता है, पर बाबा की याद से आत्मा के स्वरूप में टिक जाते हैं। कभी आत्मा हूँ... बाबा ने खींच लिया, कभी बाबा की खींच से आत्म-अभिमानी बन जाते हैं। मतलब हमको बाबा को याद करना है, कैसे भी करके। याद करना नहीं पर याद में रहना है। ऐसी याद में रहना है जिससे आत्मा पवित्र बनती जाये।

प्रश्नः- ड्रामा के अन्दर आपको कोई सीन करने के लिए कहा जाये तो आप कौन-सी सीन करना पसंद करेंगी?

उत्तरः- जहाँ देखेंगी कोई विघ्न है, सूक्ष्म पावरफुल मनसा संकल्प से चेंज करने की सेवा करेंगी। पॉजिटिव में पावर है नेगेटिव को खत्म करने की।

प्रश्नः- किसी के अवगुण चित्त पर रखने की सज़ा क्या है?

उत्तरः- हम एक-दो के गुण उठायें, किसी के भी अवगुण को कभी भी चित्त पर न रखें। किसी का अवगुण चित्त पर रखना, इसकी सज़ा यह है कि ज्ञान धारण नहीं होगा, अमृतवेले नींद आयेगी, क्लास में लेट आयेंगे, यह भोगना है। सारा समय संकल्प उस भोगने में ही खत्म होंगे तो निरंतर योगी कब बनेंगे? बाबा तो चाहते हैं, मेरा बच्चा निरंतर योगी रहे। जो भी बोझ है वो मेरे को दे दो, यह बाबा ऑफर करते हैं। बोझ बाबा को दे करके हल्के हो जाओ, लाइट बनो और लाइट से काम लो। माइट बाबा देते हैं, फिर सब कुछ राइट हो जाता है। शिवबाबा जैसा कोई नहीं, ब्रह्मा बाबा जैसा कोई नहीं, हम बच्चों जैसा भी कोई नहीं है। इतने बड़े संगठन में स्नेह, सहयोग, सहानुभूति देने की सेवा जितनी करो उतना ही कराने वाला हक लगाके हमसे कराता है। ❖